शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

लौह पुरूष वल्लभभाई पटेल के भारत निर्माण में योगदान का अध्ययन

प्राप्तिः 01.03.2022
स्वीकृतः 17.03.2022

पूनमलता
शोधार्थी, इतिहास विभाग
शहीद मंगल पाण्डे राजकीय (पी०जी०) कॉलेज
माध्यवपूरम, मेरठ (उ०प्र०)
ईमेलः *poonam.lata96398@gmail.com*

सारांश

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की वैचारिक एवं क्रियात्मक रूप में एक नई दिशा देने के कारण सरदार वल्लभभाई पटेल ने राजनीतिक इतिहास में एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया। वास्तव में वे आधुनिक भारत के शिल्पी थे। इस मितभाषी, अनुशासनप्रिय और कर्मठ व्यक्ति के कठोर व्यक्तित्व में विस्मार्क जैसी संगठन कुशलता, कौटिल्य जैसी राजनीतिक सत्ता तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति अब्राहम लिंकन जैसी अटूट निष्ठा थी। जिस अदम्य उत्साह, असमी शक्ति, मानवीय समस्याओं के प्रति व्यवहारिक दृष्टिकोण से उन्होंन निर्भय हाकर नवजात गणराज्य की प्रारम्भिक कठिनाईयों का समाधान अद्भू सफलता से किया, उसके कारण विश्व के राजनीतिक मानचित्र में उन्होंने अमिट स्थान बना लिया। सरदार पटेल ने लाजवाब कौशल के साथ इन चुनौतियों का सामना करते हुए देश को एकता के सूत्र में बांधने के कार्य को पूरा किया और एकीकृत भारत के शिल्पकार के रूप में पहचान हासिल की। इस शोध–पत्र में लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल के भारत निर्माण में योगदान का अध्ययन किया गया है।

मुख्य बिन्दू

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, आधुनिक भारत, संगठन कुशलता, लौह पुरूष और एकीकृत भारत।

प्रस्तावना

सरदार भारत के राजनीतिक एकीकरण के पिता रूपी नायक का नाम था। सरदार पटेल भारतमाता के उन वीर सपूतों में से एक थे जिनमें देश सेवा समाज सेवा की भावना कूट–कूटकर भरी हुई थी। अपनी दृढ़ता, आत्मबल, संकल्पशक्ति, निष्ठा, अटल निर्णय शक्ति, दृढ़ विश्वास, साहस पौरूष एवं कार्य के प्रति लगन के कारण ही वे लौह पुरूष के नाम से जाने जाते थे। वे कम बोलते थे काम अधिक करते थे। सरदार पटेल एक सच्चे राष्ट्रभक्त ही नहीं थे अपितु वे भारतीय संस्कृति के महान् समर्थक थे। सादा जीवन उच्च विचार स्वाभिमान देश के प्रति अनुराग यही उनके आदर्श थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 562 छोटी–बड़ी रियासतों को विलय कर उन्हें भारतीय संघ बनाने में उनकी अति महत्वपूर्ण भूमिका थी।

जन्म एवं शिक्षा–दीक्षा

सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात के एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। उनके पिता झबेरभाई भी एक महान देशभक्त थे। देशभक्ति का पाठ भी उन्होंने

इन्हीं से पढ़ा था। वल्लभभाई पटेल बचपन से ही काफी निडर थे। कहा जाता है कि बचपन में उन्हें एक बड़ा–सा फोड़ा हो गया था। उन्होंने उस फोड़े को अपने ही हाथों लोहे की सलाख गरम कर फोड़ डाला था।

उनके स्कूल जीवन में भी यही निडरता देखने को मिलती है। जहां वे पढ़ते थे वहां के एक टीचर बच्चों को अपनी ही दुकान में किताबें खरीदने के लिए विवश करते थे। उनकी धमकी से डरकर कोई उनका विरोध नहीं कर पाता था, किन्तु सरदार पटेल ने बच्चों की हड़ताल कराकर टीचर को ऐसा करने से रोक दिया। सरदार पटेल चूंकि साधारण किसान के पुत्र थे। जब उन्होंने देखा कि उनके भाई विट्ठल को पढ़ने में कठिनाई आ रही है, तो उन्होंने कॉलेज की पढ़ाई का विचार त्याग दिया।

मुख्तारी की परीक्षा देकर जो रूपया उन्होंने एकत्र किया उसी से उन्होंने वकालत की परीक्षा प्रथम श्रेणी में सन् 1910 में उत्तीर्ण की। इस परीक्षा में अंक पाने पर उन्हें साढ़े सात सौ रूपये बतौर पुरस्कार में मिले और उनकी फीस भी माफ हो गयी। वे इंग्लैण्ड से आकर घर पर ही वकालत करने लगे।

स्वतन्त्रता आन्दोलन व देश सेवा में उनका योगदान

सरदार पटेल देश की सक्रिय राजनीति में सन् 1917 से आये। जालियांवाला बाग हत्याकाण्ड में जब निर्दोषों का जनसंहार हुआ उसी के विरोध में उन्होंने बैरिस्ट्री त्याग दी। विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा प्रदान करने के लिए काशी विद्यापीठ हेतु बर्मा जाकर दस लाख रूपये एकत्र कर लाये। नवम्बर 1917 में पहली बार गांधी जी से सीधे संपर्क में आये। 1918 में अहमदाबाद जिले में अकाल राहत का बहुत व्यवस्थित ढंग से प्रबंधन किया अहमदाबाद म्यूनिसिपल बोर्ड से गुजरात सभा को अच्छी धनराशि मंजूर करवाई जिससे इंफ्लुएंजा जैसी महामारी से निपटने के लिए एक अस्थाई हॉस्पिटल स्थापित किया। 1918 में ही सरकार द्वारा अकाल प्रभावित खेड़ा जिले में वसूले जा रहे लैंड रेवेन्यु के विरूद्ध ''No-Ta'' आन्दोलन का सफल नेतृत्व कर वसूली को माफ करवाया, गुजरात सभा को 1919 में गुजरात सूबे की कांग्रेस में परिवर्तित कर दिया जिसके सचिव पटेल तथा अध्यक्ष महात्मा गांधी बने।

1920 के असहयोग आन्दोलन में सरदार पटेल ने स्वदेशी खादी, धोती, कुर्ता और चप्पल अपनाये तथा विदेशी कपड़ों की होली जलाई अहमदाबाद म्यूनिसिपल चुनाव में सभी ओपन सीटों पर जीत दर्ज की। तिलक स्वराज फण्ड के लिए 10 लाख रूपये एकत्रित किये। केवल गुजरात में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तीन लाख सदस्य बनाये। गांधी से मिलकर गुजरात विद्यापीठ स्थापित करने का निर्णय किया। 1921 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 36 वे अहमदाबाद अधिवेशन की स्वागत समिति के अध्यक्ष बने। वे गुजरात प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पहले अध्यक्ष बने।

एक वकील के रूप में सरदार पटेल ने कमजोर मुकदमें को सटीकता से प्रस्तुत करके और पुलिस के गवाहों तथा अंग्रेज न्यायाधीशों को चुनौती देकर विशेष स्थान अर्जित किया। 1908 में पटेल की पत्नी की मृत्यु हो गई। उस समय उनके एक पुत्र और एक पुत्री थी। इसके बाद उन्होंने विधुर जीवन व्यतीत किया। वकालत के पेशे में तरक्की करने के लिए कृतसंकल्प पटेल में मिड्ल टेंपल के अध्ययन के लिए अगस्त, 1910 में लंदन की यात्रा की। वहां उन्होंने मनोयोग से

अध्ययन किया और अंतिम परीक्षा में उच्च प्रतिष्ठा के साथ उत्तीर्ण हुए। फरवरी, 1913 में भारत लौटकर सरदार पटेल अहमदाबाद में बस गए और तेजी से उन्नति करते हुए अहमदाबाद अधिवक्ता बार में अपराघ कानून के अग्रणी बैरिस्टर बन गए। गम्भीर और शालीन पटेल अपने उच्च स्तरीय तौर–तरीकों और चुस्त, अंग्रेजी पहनावे के लिए जाने जाते थे। वह अहमदाबाद के फैशनपरस्त गुजरात क्लब में ब्रिज के चैंपियन होने के कारण भी विख्यात थे। 1971 तक वे भारत की राजनीतिक गतिविधियों के प्रति उदासीन रहे।

सरदार पटेल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कई बार जेल के अंदर–बाहर हुए, हालांकि जिस चीज के लिए इतिहासकार हमेशा सरदार वल्लभ भाई पटेल के बारे में जानने के लिए इच्छुक रहते हैं, वह थी उनकी और जवाहरलाल नेहरू की प्रतिस्पर्द्धा। सब जानते हैं कि 1929 के लाहौर अधिवेशन में सरदार पटेल ही गांधी जी के बाद दूसरे सबसे प्रबल दावेदार थे, किन्तु मुस्लिमों के प्रति सरदार पटेल की हठधर्मिता की वजह से गांधीजी ने उनसे उनका नाम वापस दिलवा दिया। 1945–1946 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए भी पटेल एक प्रमुख उम्मीदवार थे, लेकिन इस बार भी गांधीजी के नेहरू प्रेम ने उन्हें अध्यक्ष नहीं बनने दिया। कई इतिहासकार यहां तक मानते हैं कि यदि सरदार पटेल को प्रधानमंत्री बनने दिया गया होता तो चीन और पाकिस्तान के युद्ध में भारत का पूर्ण विजय मिलती, परन्तु गांधी जी के जगजाहिर नेहरू प्रेम ने उन्हें प्रधानमंत्री बनने से रोक दिया।

सरदार पटेल के विचार

1. जीवन की डोर तो ईश्वर के हाथ में है, इसलिए चिंता की कोई बात हो ही नहीं सकती।
2. कठिन समय में कायर बहाना ढूंढते हैं बहादुर व्यक्ति रास्ता खोजते हैं।
3. उतावले उत्साह से बड़ा परिणाम निकलने की आशा नहीं रखनी चाहिये।
4. हमें अपमान सहना सीखना चाहिए।
5. बोलने में मर्यादा मत छोड़ना, गलियां देना तो कायरों का काम है।
6. शत्रु का लोहा भले ही गर्म हो जाये, पर हथौड़ा तो ठंडा रहकर ही काम दे सकता है।
7. आपकी अच्छाई आपके मार्ग में बाधक है, इसलिए अपनी आंखें को क्रोध से लाल होने दीजिएये, और अन्याय का मजबूत हाथों से सामना कीजिये।

सत्याग्रह से जुड़ावा

सन् 1917 में मोहनदास करमचन्द गांधी से प्रभावित होने के बाद सरदार पटेल ने पाया कि उनके जीवन की दिशा बदल गई है। वे गांधी जी के सत्याग्रह (अहिंसा की नीति) के साथ तब तक जुड़े रहे, जब तक वह अंग्रेजों के खिलाफ भारतीयों के संघर्ष में कारगर रहा। लेकिन उन्होंने कभी भी खुद को गांधीजी के नैतिक विश्वासों व आदर्शों के साथ नहीं जोड़ा। उनका मानना था कि उन्हें सार्वभौमिक रूप से लागू करने का गांधी का आग्रह, भारत के तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अप्रासंगिक है। फिर भी गांधीजी के अनुसरण और समर्थन का संकल्प करने के बाद पटेल ने अपनी शैली और वेशभूषा में परिवर्तन कर लिया। उन्होंने गुजरात क्लब छोड़ दिया और भारतीय किसानों के समान सफेद वस्त्र पहनने लगे तथा भारतीय खान–पान को पूरी तरह स अपना लिया।

बारदोल सत्याग्रह का नेतृत्व

सन् 1917 से 1924 तक सरदार पटेल ने अहमदनगर के पहले भारतीय निगम आयुक्त के रूप में सेवा प्रदान की और 1924 से 1928 तक वे इ सके निर्वाचित नगरपालिका अध्यक्ष भी रहे। 1918 में उन्होंने अपनी पहली छाप छोड़ी, जब भारी वर्षा से फसल तबाह होने के बावजूद बम्बई सरकार द्वारा पूरा सालाना लगान वसूलने के फैसले के विरूद्ध उन्होंने गुजरात के कैरा जिले में किसानों और काश्तकारों के अन्दोलन की रूपरेख बनाई। उन्हें सरदार की उपाधि मिली और उसके बाद देश भर मय राष्ट्रवादी नेता के रूप में उनकी पहचान बन गई। उन्हें व्यावहारिक, निर्णायक और यहां तक कि कठौर भी माना जाता था अंग्रेज उन्हें एक खतरनाक शत्रु मानते थे।

देशी रियासतों के विलय में भूमिका

स्वतंत्र भारत के पहले तीन वर्ष सरदार पटेल उप–प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, सूचना मंत्री और राज्य मंत्री रहे। इस सबसे भी बढ़कर उनकी ख्याति भारत के रजवाड़ों को शान्तिपूर्ण तरीके से भारतीय संघ में शामिल करने तथा भारत के राजनीतिक एकीकरण के कारण है। 5 जुलाई, 1947 को सरदार पटल ने रियासतों के प्रति नीति को स्पष्ट करते हुए कहा कि– ''रियासतों को तीन विषयों 'सुरक्षा', 'विदेश' तथा 'संचार व्यवस्था' के आधार पर भारतीय संघ में शामिल किया जाएगा। ''धीरे–धीरे बहुत–सी देशी रियासतों के शासक भोपाल के नवाब से अलग हो गये और इस तरह नवस्थापित रियासती विभाग की योजना को सफलता मिली।

भारत के तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारतीय संघ में उन रियासतों का विलय किया, जो स्वयं में संप्रभुता प्राप्त थीं। उनका अलग झंडा और अलग शासक था। सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व (संक्रमण काल में) ही पी0वी0 मेनन के साथ मिलकर कई देसी राज्यों को भारत में मिलाने के लिये कार्य आरम्भ कर दिया था। पटेल और मेनन ने देसी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हें स्वायत्तता देना सम्भव नहीं होगा। इसके परिणामस्वरूप तीन रियासतें– हैदराबाद, कश्मीर और जूनागढ़ के नवाब के विरूद्ध जब बहुत विरोध हुआ तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और इस प्रकार जूनागढ़ भी भारत में मिला लिया गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहां सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया।

भारत के लौह पुरूष

सरदार पटेल को भारत का लौह पुरूष कहा जाता हैं। गृहमंत्री बनने के बाद भारतीय रियासतों के विलय की जिम्मेदारी उनकों ही सौंपी गई थी। उन्होंने अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए छह सौ छोटी बड़ी रियासतों का भारत में विलय कराया। देशी रियासतों का विलय स्वतंत्र भारत की पहली उपलब्धि थी और निर्विवाद रूप से पटेल का इसमें विशेष योगदान था। नीतिगत दृढ़ता के लिए राष्ट्रपिता ने उन्हें सरदार और लौह पुरूष की उपाधि दी थी। बिस्मार्क ने जिस तरह जर्मनी के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी उसी तरह वल्लभ भाई पटेल ने भी आजाद भारत को एक विशाल राष्ट्र बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। बिस्मार्क को जहां जर्मनी का आयरन चांसलर कहा जाता है वहीं पटेल भारत के लौह पुरूष कहलाते हैं।

निष्कर्ष

सरदार वल्लभभाई पटेल प्रसिद्ध स्वतंत्र भारत के प्रथम गृहमंत्री थे। वे 'सरदार पटेल' के उपनाम से प्रसिद्ध हैं। सरदार पटेल भारतीय बैरिस्टर और प्रसिद्ध राजनेता थे। भारत के स्वीधीनता

संग्राम के दारान 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' के नेताओं में से वे एक थे। 1947 में भारत की आजादी के बाद पहले तीन वर्ष वे उप–प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, सूचना मंत्री और राज्यमंत्री रहे थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद करीब पांच सौ से भी ज्यादा दसी रियासती का एकीकरण एक सबसे बड़ी समस्या थी। कुशल कूटनीति और जरूरत पड़ने पर सैन्य हस्तक्षेप के जरिए सरदार पटेल ने उन अधिकांश रियासतों को तिरंगे के तले लाने में सफलता प्राप्त की। चूंकि भारत के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था, इसलिए उन्हें भारत का लौह–पुरूष कहा गया या भारत का बिस्मार्क की उपाधि से सम्मानित किया गया। 15 दिसंबर, 1950 को उन्की मृत्यु हो गई और यह लौह पुरूष दुनिया को अलविदा कह गया। उन्हें मरणोपरांत वर्ष 1991 में भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' दिया गया।

संन्दर्भ

1. (2012). सरदार वल्लभभाई पटेल व्यक्ति एवं विचार, (हिन्दी, पी0एच0पी), भारतीय साहित्य संग्रह, अभिगमन तिथि, 7 दिसम्बर।
2. (2012). सरदार वल्लभभाई पटेल, (हिन्दी), वेबदुनिया हिन्दी, अभिगमन तिथि, 7 दिसम्बर।
3. (2012). लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल, जागरण जंक्शन, अभिगमन तिथि, 7 दिसम्बर।
4. (2015). कश्मीर एवं हैदराबाद, (सरदार पटेल, हिन्दी), भारतीय साहित्य संग्रह, अभिगमन तिथि, 2 जनवरी।
5. Syed, M. H., (2010). Sardar Vallabhbhai Patel, (1st ed.)., Mumbai, India : Himalaya Books, Pvt., Ltd. Pg. **25.**
6. Chopra, Pran Nath. Patel, Vallabhbhai. (1999). The Collected Work of Sardar Vallabhbhai Patel, Vol. 15, Konark, Publishers. Pg. **195, 290.**
7. Lalchand., Kewalram. (1977). The Indomitable Sardar. Bharatiya Vidya Bhavan, Pg. **4.**